ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मेधामयासिषम्। सामवेद 171
मैं धारणावती बुद्धि को प्राप्त करूँ।
May I attain superior intellect.

वर्ष 37, अंक 21 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 21 अप्रैल, 2014 से रविवार 27 अप्रैल, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

'ओ३म्' का अर्थ एवं महत्त्व

परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम समस्त वैदिक साहित्य में 'ओ३म्' बताया गया है।

'ओ३म्' क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृतं स्मर (यजुर्वेद 40/15)

क्रतो = कर्म परायण जीव, ओ३म् स्मर = सर्वरक्षक प्रभु का स्मरण कर, **क्लिबे स्मर** = अपनी शक्ति (सामर्थ्य) बढ़ाने के लिए प्रभु का स्मरण कर, **कृतं स्मर** = अपने कर्तव्य का स्मरण कर।

'ओ३म्' खं ब्रह्म (यजुर्वेद-40/17)
वह सर्व रक्षक महान परमात्मा आकाशवत् सर्वत्र व्यापक है।

'ओ३म्' प्रतिष्ठ (यजुर्वेद- 2/13)
हे सर्व रक्षक प्रभो! आप पवित्र अन्त: करण वाले भक्त के हृदय मंदिर में प्रतिष्ठित हो जाइये।

'ओ३म्' का कठोपनिषद् में यमाचार्य ने नचिकेता को उपदेश करते हुए कहा- सब वेद बार-बार जिसको वर्णन करते हैं, सब तप जिसको कहते हैं, जिसको प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करते हैं, संक्षेप में उसका उपदेश करता हूँ, वह अक्षर 'ओ३म्' है।

यह 'ओ३म्' एक अक्षर है, परन्तु यही ब्रह्म है, यही सबसे परे है, इसी अक्षर को जानकर जो कोई कुछ चाहता है, उसे

- शेष पृष्ठ 7 पर

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1 एवं दक्षिण दिल्ली के विभिन्न संस्थाओं द्वारा संगोष्ठी 'ईश्वर है या नहीं?' सम्पन्न

"ईश्वर के अस्तित्व को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता" – डॉ. अशोक चौहान

आस्तिक सुधी जनों के लिए यह हर्ष का विषय है कि विभिन्न मतों के विद्वानों एवं समाज विज्ञानियों ने एक मत से यह स्वीकार किया है कि ईश्वर का अस्तित्व है, इस सत्य तथ्य पर कोई मतभेद नहीं है। हाँ **'वह कैसा है व क्या-क्या करता है'**, यह विवाद व चर्चा का विषय हो सकता है ये विचार **"ईश्वर का अस्तित्व है या नहीं?"** विषय पर आयोजित राष्ट्रीय गोष्ठी के मुख्य अतिथि एमिटी विश्वविद्यालय नोएडा के संस्थापक व कुलाधिपति **डॉ. अशोक चौहान** ने व्यक्त किए।

यह एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी दिल्ली की 34 शैक्षणिक, सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं के तत्त्वाधान में **"ईश्वर है या नहीं"** विषय पर दिनांक 13 अप्रैल 2014 को 'आर्य ऑडिटोरियम ईस्ट ऑफ कैलाश' में आयोजित की गई। इस गोष्ठी का प्रारम्भ वेदमंत्रों के उच्चारण व दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। गोष्ठी की अध्यक्षता साँची विश्वविद्यालय (म. प्र) की नवनियुक्त कुलपति **डॉ. शशि प्रभा कुमार** ने की। गोष्टी का प्रारम्भ करते हुए गोष्ठी के मुख्य संचालक **डॉ. विनय विद्यालंकार** (अध्यक्ष संस्कृत विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामनगर, नैनीताल) ने विषय प्रवर्त्तन करते हुए कहा कि यह गोष्ठी ईश्वरवादी दार्शनिक चिन्तकों, अनीश्वरवादी दार्शनिक विचारधाराओं एवं विज्ञान के पक्ष को खुले रूप में एक साथ मंच पर प्रस्तुत करने के लिए आयोजित की गयी है। इसमें सौहार्दपूर्ण वातावरण में अपना पक्ष रखने के लिए जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, वैदिक चिन्तन एवं विज्ञान का पक्ष प्रस्तुत करने के लिए विद्वानों को आमंत्रित किया गया। गोष्ठी में सर्वप्रथम बौद्ध दर्शन का पक्ष प्रस्तुत करने के लिए अखिल भारतीय दर्शन परिषद् के पूर्व अध्यक्ष एवं दिल्ली विश्वविद्यालय दर्शन विभाग के पूर्व अध्यक्ष **डॉ. एस. आर. भट्ट** ने कहा कि बौद्ध दर्शन को नास्तिक दर्शन की श्रेणी में रखना उचित नहीं है। इस दर्शन के अनुसार, ईश्वर की अवधारणा को केवल अनुभूति का विषय माना गया है, परन्तु उसे तर्क-वितर्क से सिद्ध करना ठीक नहीं।

जैन दर्शन का पक्ष रखते हुए श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ दिल्ली के जैन दर्शन विभागाध्यक्ष **डॉ. वीर सागर जैन** ने भी जैन दर्शन को

- शेष पृष्ठ 4 पर

।।ओ३म्।।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ नई दिल्ली के अन्तर्गत झाबुआ (म.प्र.) में संचालित

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, बामनिया

प्रथम सत्र का आशीर्वाद समारोह

29 अप्रैल, 2014 (मंगलवार) तद्नुसार बैसाख अमावस्या विक्रमी सं. 2071

यज्ञ	सांस्कृतिक कार्यक्रम	आशीर्वाद समारोह	प्रीतिभोज
प्रात: 10 बजे	प्रात: 11 बजे	दोपहर 12 बजे	दोपहर 1 बजे

मुख्य अतिथि **महाशय धर्मपाल जी** चेयरमैन, MDH मसाले

-: अध्यक्षता :- माता प्रेमलता शास्त्री जी

-: विशिष्ट अतिथि :- श्री प्रकाश आर्य जी

आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं एवं बच्चों को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

निवेदक

विश्वास सोनी अध्यक्ष, थांदला आश्रम
गोविन्द सिंह राठौर भूमिदानदाता
प्रवीण अत्रे विद्यालय प्रधानाचार्य
जीव वर्धन शास्त्री प्रभारी, म.प्र.
संजय मखौड कोषाध्यक्ष बामनिया
जोगेन्द्र खट्टर प्रभारी, दिल्ली
धर्मपाल गुप्ता उप प्रधान, सेवाश्रम

वेद-स्वाध्याय

सृष्टि यज्ञ

\- स्वामी देवव्रत सरस्वती

यो यज्ञो विश्वतस्तन्तुभिस्तत एकशतं देवकर्मेभिरायतः। इमे वयन्ति पितरो य आययुः प्र वयाप वयेत्यासते तते।। ऋग्वेद 10/130/1

अर्थ—(**यः यज्ञः**) सृष्टि उत्पत्ति रूप यज्ञ (**तन्तुभिः**) परमाणुओं के द्वारा (**विश्वतः**) सब ओर से (**ततः**) फैला हुआ (**देवकर्मेभिः**) परमात्मा के रचना आदि कर्मों द्वारा (**एकशतम्**) एक सौ ब्रह्म वर्ष की अवधि प्रमाण अथवा तत्त्वों से (**आयतः**) दीर्घ हुआ (**इमे पितरः**) ये ऋतुयें या प्राण (**वयन्ति**) तन्तुवाय जैसे पट को बुनता है वैसे ही इसका निर्माण करते हैं (**ये आययुः**) जो सर्वत्र प्राप्त हैं और (**प्रवय-अपवय**) ऊपर से बुनो, नीचे से बुनो इस प्रकार ताने-बाने के लिये प्रेरणा देते हैं (**तते आसते**) तथा सृष्टि यज्ञ रूप पट में ही विद्यमान रहते हैं।

परमात्मा यज्ञ रूप होने से उस द्वारा रचा गया यह संसार भी यज्ञ रूप ही है। देवपूजा, संगतिकरण, दान अर्थ में यजधातु का प्रयोग होता है। पदार्थ विद्या का नाम संगतिकरण है जिसे रसायन शास्त्र भी कहा जाता है। परमात्मा ने विभिन्न परमाणुओं को संहत कर विविध पदार्थों की रचना की है। सबके गुण, धर्म, रंग, रूप, आकार में भिन्नता दिखाई देती है यहाँ तक कि जुड़वाँ बच्चे भी पूर्णतया एक दूसरे से आकृति में नहीं मिलते। इसीलिये मन्त्र में सृष्टि रचना को यज्ञ कहा गया है। जैसे यज्ञ कुण्ड में समिधा, घृत, सामग्री से विधि-विधान पूर्वक यज्ञ क्रिया सम्पन्न होती है वैसे ही सृष्टि यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले पदार्थों का वर्णन मन्त्र में आया है—**यो यज्ञो विश्वतस्तन्तुभिस्ततः** जिस सृष्टि उत्पत्ति रूप यज्ञ का **तन्तुभिः** परमाणुओं द्वारा सब ओर से विस्तार हुआ। जैसे तन्तुवाय [बुनकर] तन्तुओं, सूत्रों का ताना-बाना बुन विस्तृत वस्त्र का निर्माण करता है वैसे ही जगत् निर्मात्री शक्ति ने अपनी ईक्षण क्रिया द्वारा प्रकृति में हलचल उत्पन्न की और सत्त्व, रज, तम की साम्यावस्था में परिवर्तन हो प्रथम महत्तत्व की उत्पत्ति हुई।

संसार पट को बुनने वाले ने **एकशतं देव कर्मेभिरायतः** एक सौ दिव्य वर्ष तक चलने वाले इस संसार का निर्माण एक सौ दिव्य शक्तियों द्वारा निर्माण किया। ८ वसु, १२ आदित्य, ११ रुद्र, ११ विश्वदेव, ४९ मरुत् तथा १० विश्वसृज ही वे दिव्य शक्तियाँ हैं जो विश्व-निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका का वहन करती हैं। कुछों के मत में आधुनिक रसायनशास्त्र में बताये गये एक सौ या कुछ अधिक तत्त्वों के लिये यह संकेत दिया है। यहाँ तीनों को मिलाकर विचार करना उचित रहेगा।

१. सृष्टि-निर्माण में एक सौ तत्त्वों की भूमिका—आधुनिक रसायनशास्त्र में १०३ तत्त्व माने गये हैं। इनमें से कुछ का प्रयोगशाला में निर्माण किया जाता है। प्रलयावस्था में ये साम्यावस्था में रहते हैं। इन्हें सत्त्व, रज, तम रूप तीन गुणों वाला भी कह सकते हैं। इनके गुणों में परस्परविरोध अर्थात् विभिन्नता है। सत्त्व रजस् को अपनी ओर आकृष्ट करता है, यही उसका प्रीतिरूप है। रजस् सत्त्व से दूर भागना चाहता है यह उसका अप्रीति स्वरूप है जिसके कारण रजस् सत्त्व के चारों ओर चक्र लगाता रहता है। तमस् केन्द्रक बन निष्क्रिय बना रहता है। आधुनिक विज्ञान में इन्हें इलैक्ट्रोन—रजस्, प्रोटोन—सत्त्व, न्यूट्रोन—तमस् कहते हैं। जो तन्मात्राओं के गुण हैं। साम्यावस्था में इन तीनों के गुण अन्तर्मुखी रहते हैं।

परमात्मा की ईक्षण शक्ति से प्रकृति में हलचल प्रारम्भ होती है और सत्त्वादि गुणों की दिशा बाहर की ओर हो जाती है। यह सृष्टि रचना का प्रारम्भ है। प्रकृति की पहली रचना महत्तत्व जिसे समष्टि बुद्धि, आप: नाम से जाना जाता है। महत्तत्व से अहंकार, अहंकार से पांच तन्मात्रा, सूक्ष्म भूत और दश इन्द्रियाँ तथा ग्यारहवाँ मन, पाँच तन्मात्राओं से पृथिवी आदि पाँच भूत, ये चौबीस, पच्चीसवाँ पुरुष यह पच्चीस तत्त्वों का गण समुदाय है। वर्तमान विज्ञानसम्मत तत्त्व मूल प्रकृति न होकर तन्मात्रायें हैं क्योंकि इनका विघटन हो जाता है। यदि इनका सूक्ष्म दृष्टि से विवेचन करें तो भारतीय दर्शनों में कहे पञ्चभूतों में ही समावेश हो जाता है। एक बात में विज्ञान और भारतीय दर्शन सहमत है कि पूर्वोक्त तत्त्वों से ही सृष्टि रचना होती है।

२. सृष्टि यज्ञ में एक सौ देवकर्म का अभिप्राय दिव्यशक्तियों से है जो सृष्टि-निर्माण में परम सहयोगी हैं। यह सत्य है कि ये शक्तियाँ परमाणुओं में ही सन्निहित हैं। इसलिये आधुनिक वैज्ञानिक यह मानते हैं कि सृष्टि निर्माण में ईश्वर की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रकृति में ही यह क्षमता है कि वह अपने आप जगदाकार और फिर प्रलयावस्था को प्राप्त होती रहती है। यह तो सत्य है कि प्रकृति में जो गुण हैं वे शाश्वत हैं परन्तु उनको मिलाने वाला भी तो कोई होना चाहिये। बिना ज्ञान के एक निश्चित अनुपात में परमाणुओं का मिलना कदापि सम्भव नहीं है। यदि परमाणुओं का स्वभाव परस्पर मिलकर सृष्टि रचना करना है तो स्वभाव के नित्य होने से विनाश नहीं होना चाहिये। यदि विनाश को भी स्वाभाविक मानें तो उत्पत्ति नहीं होगी। और जो उत्पत्ति और विनाश दोनों को मानें तो अव्यवस्था दोष आ जायेगा। इसलिये प्रकृति, परमाणुओं को ज्ञान और युक्ति से परमेश्वर के मिलाये बिना जड़ पदार्थ स्वयं कुछ भी कार्यसिद्धि के लिये विशेष पदार्थ नहीं बन सकते। (सत्यार्थप्रकाश, अष्टम समु०) इसीलिये परमात्मा को प्राणों का भी प्राण कहा है जो ईक्षण क्रिया द्वारा सृष्टि की रचना करता है।

३. एक शत देवकर्मो का यह भी अर्थ लिया जा सकता है कि जिस सृष्टि रूप पट का निर्माण तन्तुओं से देव शक्तियाँ करती है उसकी अवधि एक सौ दिव्य वर्ष हैं। यह समय चार अरब, बत्तीस करोड़ वर्ष है अर्थात् इतने वर्ष तक सृष्टि बनी रहती है।

इमे वयन्ति पितरो य आययुः इस सृष्टि पट को बुनने वाली शक्तियाँ सर्वत्र व्याप्त हैं जिन्हें प्राण कहते हैं जो इसका निर्माण करती हैं। जैसे बुनकर ताना-बाना का संयोग कर वस्त्र को बुनता है वैसे ही **प्रवयापवयेत्यासते तते** ऊपर बुनो-नीचे बुनो, इस प्रकार ये शक्तियाँ प्रेरणा देती रहती हैं। वस्त्र को बुनने के पश्चात् भी ये शक्तियाँ उसमें विद्यमान रहती हैं।

यज्ञस्वरूप प्रभु के द्वारा बुने गये इस सृष्टि पट का हमें सावधानी से उपयोग करना चाहिये जिस पर कहीं कोई दाग न लग जाये। **- क्रमशः**

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे कि उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन शुल्क भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें अन्यथा **जून, 2014 मास से आर्यसन्देश भेजना बन्द कर दिया जाएगा। वार्षिक शुल्क 250/- रुपये** तथा **आजीवन शुल्क 1000/- रुपये** है।

पत्र व्यवहार के लिए सदस्य संख्या तथा पिनकोड अवश्य लिखें। - ***सम्पादक***

समस्त विद्यालयों एवं विद्यार्थियों को वार्षिक परीक्षा के उत्कृष्ट परिणामों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा

समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सामयिक विचार में वेद का सन्देश

हमारा प्रतिनिधि कैसा हो?

- भद्रसेन वेद दर्शनाचार्य

भारतीय संविधान और प्रशासन के प्रजातंत्रात्मक होने से हमें लोकसभा, विधानसभा, नगर पालिका या पंचायत के रूप में कई बार अपने प्रतिनिधियों को चुनने का अवसर मिलता है। तब हमारे सामने प्रश्न उपस्थित होता है कि हमारा प्रतिनिधि कैसा हो? हम अपना प्रतिनिधि किस लिए चुनते है? जब हम इस पर विचार करते हैं तो स्वाभाविक रूप से स्वत: इसका समाधान प्राप्त होता है। अर्थात् हमारा प्रतिनिधि ग्राम, नगर, प्रदेश तथा राष्ट्रीय स्तर पर सुशासन स्थापित करे। जिस से हमारा ग्राम, नगर, प्रदेश और राष्ट्र रामराज्य, सुराज्य बन कर अपने नागरिकों के लिए बन्धुता, समता, सुरक्षा, स्वतंत्रता, समृद्धि और प्रगति देने में समर्थ हो सके। यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि योग्य, उत्तरदायित्वपूर्ण व्यक्ति ही योग्य, चिरस्थायी, सुदृढ़, समृद्धिशाली प्रशासन देने में सक्षम होता है और ऐसा प्रजातन्त्रीय प्रशासन ही सब के लिए लाभप्रद हो सकता है। अत: हमारा प्रतिनिधि वह व्यक्ति हो जो ऐसा करने में सक्षम हो।

कैसा प्रतिनिधि सुशासन दे सकता है? इसका एक सुन्दर समाधान अथर्ववेद के बारहवें काण्ड के पृथिवी (भूमि) सूक्त में मिलता है। वहां बताया गया है कि अपनी पृथिवी, मातृभूमि को कैसे सत्य-शिव और बना सकते हैं। अर्थात हमें अपने देश को उत्तम, समृद्धिशाली बनाने के लिए क्या-क्या करना चाहिए। प्रस्तुत प्रसंग की दृष्टि से इस सूक्त का पहला मन्त्र विशेष विचारणीय है।

सत्यं बृहत्-ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रहम यज्ञ: पृथिवीं धारयन्ति। सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरूं लोकं पृथिवी न: कृणोतु।। *अथर्व. 12, 1,1*

सत्यम् = मन-वाणी और कर्म की एकरूपता। जैसे कि महात्माओं, सच्चों के जो मन में होता है, वैसा ही वाणी और व्यवहार में होता है। **मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।** अर्थात् कथनी और करनी में एक जैसापन। पर झूठे सोचते कुछ हैं, बोलते कुछ और हैं तथा वे करते उससे भिन्न हैं। जैसे कि हाथी के खाने के दान्त अलग होते हैं और दिखाने के दान्त भिन्न होते हैं अर्थात् वे दुहरी जिन्दगी जीते हैं पर सच्चे एक जैसे रहते हैं, अवसर के अनुसार बदलते नहीं। उनका जीवन निश्च्छल, निर्दोष, धोखे रहित होता है। इसी का नाम सदाचार है। **बृहत्** = उदारता, हृदय की विशालता, विशाल हृदयवाला ही दूसरों के प्रति सहानुभूति, उपकार, दया की भावना वाला होता है। तभी वह अपने-पराये के भेदभाव के बिना सहयोग, सहायता करता है। **ऋतम्** = नियमों का पालन, संविधान में विश्वास भावना, कर्त्तव्यपरायणता। **उग्रम्** = प्रशासन के संचालनार्थ दृढ़ स्वभाव, न्याययुक्त सामाजिक नियमों का कठोर पालन। **दीक्षा** = योग्यता, **व्रतेन दीक्षामाप्नोति** = किसी कार्य को करने से तत् विषयक योग्यता प्राप्त होती है, कार्य कुशलता। **तप:** = भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, आदि द्वन्द्वों का सहना, कष्ट सहनशक्ति, नियमित जीवन, संयम, इन्द्रियों को अपने नियन्त्रण में रखना अर्थात् अपने कर्तव्य को करते हुए जो कष्ट, क्लेश, आकर्षण आंख, उस को सहना, विलासी न बनना। **ब्रह्म्** = ज्ञान, विद्या, शिक्षा और **यज्ञ:**= दूसरों का भला करने वाले कर्म अर्थात् दूसरों की भलाई की भावना। ये सत्य आदि गुण ही विकास, समृद्धि को धारण करते हैं। सत्य आदि गुणों से युक्त पृथिवी राष्ट्रवासियों के भूत, भविष्य और वर्तमान की रक्षिका एवं निर्मात्री होती है। तभी कोई देश दर्शनीय, प्रशंसनीय, विकसित और समृद्ध होता है।

इस मंत्र का सीधा सा भाव यही है कि जिस देश के नागरिक और विशेष रूप से प्रतिनिधि सत्य आदि गुणों से युक्त होते हैं वही देश सुखी, सम्पन्न तथा समृद्ध हो सकता है। अत: हमारे प्रतिनिधि ऐसे ही हों या उन्हीं को शासक पद पर प्रतिष्ठित करना चाहिए जिन के जीवन और व्यवहार में इन गुणों का समावेश हो। अन्यथा 'बबूल के बीज बोकर आम खाने' की आशामात्र ही है। प्रजातंत्र देश के प्रतिनिधियों का सब से मुख्य गुण-सहानुभूति ही है। क्योंकि मतदाताओं को अपने विविध कार्यों के लिए प्राय: अपने प्रतिनिधियों के पास जाना पड़ता है जो बिना भेदभाव के हमेशा सब के कार्यों को करने के लिए सदा उद्यत रहे, उसी को जनता का सच्चा प्रतिनिधि कहा जा सकता है। सहानुभूतिशील व्यक्ति में ही जनतंत्र के दो मुख्य गुण-जनसम्पर्क और जनसेवा होते हैं। इस का सक सुन्दर परीक्षण गत निर्वाचन के समय हुआ। निर्वाचन के दिनों में कुछ मतदाता मिलकर रात को पहले एक प्रत्याशी के पास गए और उस से निवेदन किया कि हमारे पड़ोस के एक निरपराध व्यक्ति को झूठी शिकायत पर पुलिस वाले पकड़ कर थाने में ले गए हैं। अत: हमारे साथ थाने चलिए। उसने कहा अब रात हो गई है, प्रात: काल आइए, मैं आप के साथ थाने चलूंगा। तब वे दूसरे प्रत्याशी के पास पहुंचे। उसने जब बात सुनी तो बहाना बना कर टाल दिया। तब वे सारे तीसरे के पास पहुंचे और वह बात सुनते ही सोने वाले वस्त्रों में ही उनके साथ चल पड़ा तब एक ने कहा - आप वस्त्र तो बदल लें। उसने उत्तर दिया - वस्त्रों की कोई बात नहीं, पहले दुखी व्यक्ति की मौके पर सहायता होनी चाहिए। तब उन्होंने सच्चाई बताकर धन्यवाद पूर्वक पूर्ण समर्थन का आश्वासन दिया। तभी तो - अयोध्या सिंह उपाध्याय ने लिखा है-

जो हो राजा और प्रजा दोनों का प्यारा,
जिस का बीते देश-प्रेम में जीवन सारा।
देश हितैषी हमें चाहिए अनुपम ऐसा,
बहे देश-हित की जिसकी नस-नस में धारा।।

प्रजातंत्र वाली राजनीति की असली जड़ यही है कि उस के प्रतिनिधि का जनता के साथ सीधा सम्बन्ध हो। वह उन के सुख-दुख में सहानुभूतिशील हो, सहयोगी हो, उन जैसी परिस्थितियों में जीवन जिये, न कि अलग-थलग रहकर। अत: प्रजातंत्र की जड़ - जन सम्पर्क, जन सेवा और जीवन - व्यवहार में ही है। इस लिए हमें ऐसा प्रत्याशी अपने प्रतिनिधि के रुप में निर्वाचित करना चाहिए। जिस के जीवन और व्यहार में उपर्युक्त गुण हों। अयोग्य, भ्रष्ट, संविधान के प्रति अनादर की भावना रखने वाले, सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन करने वाले, केवल अपना उल्लू ही साधने वाले और जनसम्पर्क और जनसेवा से शून्य प्रत्याशी को किसी भी परिस्थिति में कभी भी अपना प्रतिनिधि नहीं चुनना चाहिए। जो शराब (पिला), धन आदि दे और जात-विरादरी जैसे प्रलोभन दे कर अपनी ओर आकर्षित करे तथा डरा-धमका कर वोट लेने का यत्न करे। उस को अपना प्रतिनिधि नहीं बनाना चाहिए। अत: मतदाताओं! आओ जागो और मिलकर प्रतिज्ञा करो कि हमारा प्रत्याशी केवल योग्यतम प्रत्यासी ही होगा।

"..... जिस देश के नागरिक और विशेष रूप से प्रतिनिधि सत्य आदि गुणों से युक्त होते हैं, वही देश सुखी, सम्पन्न तथा समृद्ध हो सकता है। अत: हमारे प्रतिनिधि ऐसे ही हो या उन्हीं को शासक पद पर प्रतिष्ठित करना चाहिए, जिन के जीवन और व्यवहार में इन गुणों का समावेश हो। अन्यथा 'बबूल के बीज बोकर आम खानें' की आशामात्र ही है।....."

"..... प्रजातंत्र देश के प्रतिनिधियों का सब से मुख्य गुण-सहानुभूति ही है। क्योंकि मतदाताओं को अपने विविध कार्यों के लिए प्राय: अपने प्रतिनिधियों के पास जाना पड़ता है। जो बिना भेदभाव के हमेशा सब के कार्यों को करने के लिए उद्यत रहे, उसी को जनता का सच्चा प्रतिनिधि कहा जा सकता है। सहानुभूतिशील व्यक्ति में ही जनतंत्र के दो मुख्य गुण-जनसम्पर्क और जनसेवा होते हैं। इस का सक सुन्दर परीक्षण गत निर्वाचन के समय हुआ।....."

बी - 2, 92/7 बी,
शालीमार नगर, होशियारपुर
(पंजाब)- 146001

अन्तरिक्ष में केवल संस्कृत चलती है - नासा

आजकल हर तरफ अंग्रेजी का बोलबाला है। विज्ञान से लेकर कार्यालयी भाषा के रूप में अपनी जगह बना चुकी अंग्रेजी अब वक्त की जरूरत बन चुकी है। लेकिन अगर हम कहें कि इस जरूरत की भी अपनी कुछ कमजोरियां हैं। जिनका निदान केवल संस्कृत के पास है तो निश्चित तौर पर आप पूछेंगे कैसे? वह ऐसे कि देवताओं की भाषा संस्कृत अंतरिक्ष में कोई भी मैसेज भेजने के लिए सबसे उपयोगी भाषा के रूप में सामने आई है। नासा के वैज्ञानिकों की मानें तो जब वह स्पेस ट्रैवलर्स को मैसेज भेजते थे तो उनके वाक्य उलटे हो जाते थे। इस वजह से मेसेज का अर्थ ही बदल जाता था। उन्होंने दुनिया के कई भाषा में प्रयोग किया लेकिन हर बार यही समस्या आई। आखिर में उन्होंने संस्कृत में मेसेज भेजा क्योंकि संस्कृत के वाक्य उलटे हो जाने पर भी अपना अर्थ नहीं बदलते हैं। यह रोचक जानकारी हाल ही में एक समारोह में दिल्ली सरकार के प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के निदेशक डॉ. जीतराम भट्ट ने दी।

दिल्ली सरकार की संस्कृत अकादमी ने दिल्ली के करोलबाग, मयूर विहार और गौतम नगर में लोगों को संस्कृत सिखाने के उद्देश्य से तीन शिक्षालयों के उद्घाटन के अवसर पर यह समारोह आयोजित किया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए स्वामी प्रणवानन्द महाराज ने कहा कि संस्कृत में सभी प्रकार के उपयोगी विषय हैं, जरूरत उनके प्रसार की है। समारोह में अनेक डॉक्टर, इंजीनियर, अधिकारी और व्यवसायी भी उपस्थित थे।

आर्यसमाज शक्तिनगर, अमृतसर में पधारने पर श्री अरुण जेटली जी का अभिनन्दन

अमृतसर में चुनाव प्रचार के दौरान श्री अरुण जेटली जी ने आर्य समाज शक्ति नगर पधारकर यज्ञ किया। इस अवसर पर श्री अरुण जेटली जी को गायत्री मन्त्री का स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित करते सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, आर्य अनाथलय दरियागंज दिल्ली के श्री नितिज्जय चौधरी, आर्यसमाज शक्ति नगर एवं आर्य केन्द्रीय सभा अमृतसर के अधिकारी श्री राकेश मेहरा, हीरालाल कंधारी, एवं श्री दिनेश आर्य। सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री श्री राजीव आर्य जी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1 एवं दक्षिण दिल्ली .....

आस्तिक दर्शन की श्रेणी में रखने की पुरजोर वकालत की। उन्होंने कहा कि जैन धर्म के तीर्थंकर एवं आचार्य ईश्वर के अस्तित्व को मानते हैं, परन्तु उसे सृष्टिकर्ता व कर्मफल-प्रदाता स्वीकार नहीं करते, वह हमारे कर्मों का दृष्टा व सर्वोच्च सत्ता है।

वैदिक चिन्तन का पक्ष रखते हुए उत्तराखण्ड के नैनीताल से पधारे डॉ. विनय विद्यालंकार ने अपने तर्क व प्रमाण प्रस्तुत करते हुए कहा कि जगत् की उत्पत्ति के 'निमित्त कारण' के रुप में सृष्टिकर्ता ईश्वर, की पुष्टि की। उन्होंने अपने वक्तव्य में ईश्वर को कर्मफल प्रदाता एवं सृष्टि के नियन्ता के रुप में प्रस्तुत किया। डॉ. विद्यालंकार ने यह भी कहा कि जब तक अनादि सत्ता के रुप में **ईश्वर, जीव** व **प्रकृति** इन तीन सत्ताओं के पोषक त्रैतवाद पर सकारात्मक विचार नहीं किया जायेगा, तब तक ईश्वर व सृष्टि सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर देना असंभव है। यह सृष्टि जिस नियमबद्ध, प्रयोजनबद्धता और विशालता को लिए हुए सुव्यवस्थित रुप में चल रही है, उसका संचालन किसी विशेषज्ञ चेतन सत्ता के बिना संभव नहीं। इसी सत्ता को हम 'ईश्वर या परमात्मा' के नाम से सम्बोधित करते हैं।

द्वितीय सत्र का प्रारम्भ वैज्ञानिक पक्ष के साथ हुआ। इसका प्रस्तुतीकरण जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, दिल्ली के जीवन विज्ञान (Life Sciences) के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष **डॉ. पी. के. यादव** ने किया। उन्होंने अत्यन्त विनम्रता के साथ विज्ञान का पक्ष रखते हुए कहा कि विज्ञान की अब तक की गयी शोध-प्रक्रिया में परमाणु की प्रेरक शक्ति तक पहुँच ही चुकी है, परन्तु 'वह प्रेरक शक्ति क्या हैं?' वैज्ञानिक अभी तक इसे जान नहीं पाये हैं। इतना अवश्य है कि यह एक विलक्षण शक्ति ही है। यद्यपि स्पष्ट रुप में यह तो नहीं कहा गया कि वह शक्ति ईश्वर ही है। डॉ. यादव का कहना था कि अभी तक 'ईश्वर' नामक शक्ति को किसी भी उच्चकोटि के वैज्ञानिक ने अस्वीकार नहीं किया है। डॉ. यादव ने वैज्ञानिक शब्दावली को बहुत ही सरल शब्दों में प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए एमिटी वि.वि के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. अशोक चौहान एवं मंचस्थ वैदिक विद्वान डॉ. विनय विद्यालंकार एवं आचार्य वागीश।

इस गोष्ठी के सर्वाधिक प्रभावशाली व तर्क सम्मत पक्ष के प्रस्तुत कर्त्ता अन्तिम वक्ता डॉ. वागीश आचार्य जी थे जो आर्ष गुरुकुल एटा के प्राचार्य है। आचार्य जी ने वैदिक चिन्तन को प्रस्तुत करते हुए सर्वप्रथम इस सर्वमान्य सिद्धान्त की स्थापना की कि जहाँ भी नियम होता है, वहाँ उसका नियामक अवश्य होगा। इसी प्रकार, जहाँ व्यवस्था है, वहाँ उसका व्यवस्थापक भी अवश्य होना चाहिए। इस आधार पर उन्होंने अनेक उदाहरणों के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि जितने सुन्दर नियमों और व्यवस्था से यह संसार चल रहा है वह किसी नियामक व व्यवस्थापक के बिना सम्भव नहीं हो सकता। इस नियोजक और व्यवस्थापक को ईश्वर नाम से जाना जाता है। उन्होंने कहा कि विज्ञान यह तो सिद्ध करता है कि यह जगत् कैसे उत्पन्न होता है व चलता है परन्तु 'यह संसार क्यों उत्पन्न हुआ?' इसका उत्तर विज्ञान के पास नहीं है, जहाँ विज्ञान की सीमा समाप्त हो जाती है, वहाँ से दर्शन का आरम्भ होता है। अत: आज इस प्रकार के सब प्रश्नों का उत्तर दर्शन से प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि यह दर्शन (Philosophy) का विषय है। हमें इस सत्य को स्वीकार करना चाहिए। आचार्य श्री ने आज के समय की सबसे बड़ी समस्या पर कुठाराघात करते हुए स्पष्ट शब्दों में कहा कि आज इस बात पर बहस तो होती है कि '**कौन सच्चा है (Who is right)**' परन्तु '**सच क्या है (What is right)**' पर चिन्तन नहीं होता।

इस गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. शशि प्रभा कुमार ने सभी विद्वानों के प्रस्तुत विषय की समीक्षा करते हुए कहा कि किसी भी विद्वान ने ईश्वर के अस्तित्व को नकारा नहीं। स्पष्टत: सिद्ध ही है कि ईश्वर तो है परन्तु उसके स्वरुप के विषय में सबके

- शेष पृष्ठ 8 पर

।। ओ३म्।।
गुरुकुल के आयुर्वेदिक उत्पाद खरीदें गुरुकुल परम्परा को आगे बढ़ाएँ

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष, गु.कांगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
आपकी अपनी फार्मेसी

प्रमुख उत्पाद

गुरुकुल चाय, पायोकिल मंजन, च्यवनप्राश, मधुमेह नाशिनी, मधु (शहद), ब्राह्मी रसायन, आंवला रस, आंवला कैंडी, गुरुकुल शिलाजीत, द्राक्षारिष्ठ, रक्त शोधक, अश्वगंधारिष्ठ, सफेद सुरमा, गुलकन्द, महाभृंगराज तैल

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार, पो. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) -249404
फोन - 0134-416073, 09719262983 (व्यावसायाध्यक्ष)

गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से शिक्षित युवक-युवतियों के वैवाहिक परिचय सम्मेलन की वर्तमान में महती आवश्यकता

– आचार्य अग्निमित्र

वैदिक परम्परा में विवाह को एक महत्त्वपूर्ण संस्कार माना गया है जिसका उद्देश्य समाज तथा राष्ट्र विकास करना है। विख्यात पश्चिमी समाजशास्त्री हांबेल का कथन है कि विवाह सामाजिक नियमों का पुंज है जो कि विवाहित युग्म के पारस्परिक और उसके बच्चों के समाज के प्रति सम्बन्धों को नियन्त्रित परिभाषित करता है। विवाह में जिन मूलभूत तत्त्वों को महत्त्व दिया जाता है उन तत्त्वों के आधार पर ही देश का सामाजिक व सांस्कृतिक विकास होता है।

वैदिक धर्म के अनुसार विवाह उन्हीं का होना चाहिए जिनके गुण-कर्म और स्वभाव सदृश हों तथा जिन्होंने विवाह के लिए वेदों का अध्ययन, विद्या ग्रहण, युवावस्था, ब्रह्मचर्य का पालन, विवाह से पूर्व गुरु की विधिवत् अनुमति तथा कर्म के आधार पर वर्ण का चयन आदि आवश्यक योग्यताएं पूर्ण कर ली हों।

विवाह की इन सभी आवश्यक योग्यताओं में से अधिकांश का सीधा सम्बन्ध वर या वधू के आचार्य या गुरुकुल से है क्योंकि आचार्य द्वारा समावर्तन में जो दीक्षांत उपदेश दिया जाता है वही व्यक्ति के गृहस्थ जीवन की आधार भूमि तैयार करता है। साथ ही गुण, कर्म तथा स्वभाव का जितना ज्ञान गुरुकुल के आचार्य को होता है उतना अन्य किसी को नहीं। इसलिए आज भी जब-जब व्यक्ति के चरित्र प्रमाण पत्र की आवश्यकता होती है तो जिस शिक्षण संस्थान में उसने अध्ययन किया है उसके चरित्र प्रमाण पत्र को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है।

दूसरी बात व्यक्ति के वर्ण के निर्धारण का अधिकार भी धर्मशास्त्रों ने गुरुकुल के आचार्य को ही प्रदान किया कि विवाह से पूर्व कन्याओं की सोलहवें वर्ष में और पुरुषों की पच्चीसवें वर्ष में परीक्षा कर वर्ण नियत करना चाहिए जिससे समान वर्ण में विवाह किया जा सके।

ज्ञातव्य है कि सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आठवां सम्मेलन आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.) एवं 9वां परिचय सम्मेलन आर्यसमाज कीर्ति नगर नई दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। विस्तृत सूचना एवं फार्म पृष्ठ 6 पर पकाशित किया गया है। समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि अपने विवाह योग्य बच्चों का पंजीकरण इन सम्मेलनों के लिए अवश्य कराएं।

इस विवेचन से स्पष्ट है कि वैदिक परम्परा में जिस समान गुण, कर्म, स्वभाव वाले युवक युवती के विवाह पर बल दिया गया है उसके प्रमाण पत्र देने का अधिकारी मात्र गुरुकुल है।

आज भारत में आर्य समाज द्वारा सैंकड़ों गुरुकुलों का संचालन किया जाता रहा है, जिससे हजारों युवक तथा युवतियां ब्रह्मचर्य पूर्वक वेद वेदांग दर्शन आदि का अध्ययन कर रहे हैं, किन्तु उनके जीवन में आने वाली विवाहगत समस्याओं की ओर अभी भी आर्य समाज के मनीषियों, विद्वानों तथा आचार्यों का ध्यान नहीं गया है। गुरुकुल में अध्ययन करने के उपरान्त उन हजारों ब्रह्मचारियों, ब्रह्मचारिणियों को विवाह के लिए उपयुक्त मंच ने मिलने के कारण **परिस्थितिवश आर्य संस्कारों से बिल्कुल अपरिचित जीवन साथी से विवाह करना पड़ता है।** जिसके फलस्वरूप वैचारिक साम्यता न होने के कारण वैवाहिक जीवन में समायोजन करना मुश्किल हो जाता है तथा वैवाहिक जीवन के द्वारा उस सांस्कृतिक विकास का लक्ष्य अधूरा रह जाता है, जिसको लेकर आर्य समाज द्वारा इन गुरुकुलों की स्थापना की गई थी कि इनमें तैयार होकर निकलने वाले स्नातक, स्नातिकाएं आर्य संस्कारों से युक्त एक नये समाज का निर्माण करेंगे।

लेखक जो स्वयं गुरुकुल का छात्र रहा है उसका यह मानना है कि गुरुकुल में अध्ययन के उपरान्त इन स्नातक, स्नातिकाओं को एक ऐसा उपयुक्त मंच मिलना चाहिए, जिससे वे अपने योग्य वर या वधू का चयन कर सकें तथा अल्प परिश्रम से ही आर्य संस्कारों से युक्त परिवारों का निर्माण कर सकें। वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार का संकल्प लेकर जब ये गुरुकुल के स्नातक, स्नातिकाएं समाज में आते हैं तो इनमें से अधिकतर का समय आर्य संस्कारों से अपरिचित अपने जीवन साथी को आर्य विचारधारा से जोड़ने में ही लग जाता है। और कालान्तर में समयाभाव व गृहस्थी के गुरुत्तरभार के कारण आर्य समाज के प्रचार से दूर चले जाते हैं। खासतौर पर गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियां को इस समस्या का सामना करना पड़ता है क्योंकि पति प्रधान समाज के बन्धन उन्हें स्वेच्छानुसार प्रचार कार्य से रोकते हैं।

इसलिए अब समय आ गया है कि जिस प्रकार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है उसी प्रकार के प्रयास इन गुरुकुलों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के लिए किये जायें। उन्हें एक उचित अवसर व मंच प्रदान किया जाए कि वे भी अपने गुण-कर्म-स्वभाव के अनुरूप विवाह कर सकें। इतिहास साक्षी है कि विवाह सम्बन्धों ने इतिहास की धाराओं को मोड़ दिया है। राष्ट्रों के भूगोल को बदल दिया है इसलिए सभी पक्षों को साथ लेकर गुरुकुल के इन स्नातक, स्नातिकाओं के लिए उचित वैवाहिक मंच प्रदान किया जाए जिससे ऋषि के कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के स्वप्न को साकार किया जा सके।

– 2-279, स्वामी विवेकानंद नगर
कोटा (राजस्थान)- 324010

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार को 'उत्तराखण्ड रत्न सम्मान'

'आल इंडिया कांफ्रेंस आफ इंटेलक्चुअल्स' नामक बुद्धिजीवियों की संस्था की ओर से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार को 'उत्तराखण्ड रत्न' से सम्मानित किया गया। रविवार दिनांक 20.04.2014 को बड़ोवाला देहरादून में आर.के. इंडिया ग्रांट स्थित एक होटल में आयोजित किये गये एक विशेष कार्यक्रम में कुलपति को 'धर्म एवं संस्कृति' के क्षेत्र में तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में उल्लेखनीय प्रगति एवं समाज सेवा के लिए विशिष्ट कार्य करने पर यह सम्मान दिया गया।

इस अवसर पर डॉ. सुरेन्द्र कुमार को माल्यार्पण के अतिरिक्त अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह तथा एक प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित करने वाली हस्तियां थीं- छत्तीसगढ़ के पूर्व राज्यपाल श्री के.एम. सेठ, उत्तराखण्ड हाईकोर्ट के पूर्व जस्टिस श्री राजेश टंडन, डॉ. एस. फारूख देहरादून आदि। संस्था के अध्यक्ष आर.सी. दीक्षित पूर्व डी.जी.पी. (पुलिस) तथा राष्ट्रीय सचिव, जनरल पी.एन. शर्मा, सुप्रीम कोर्ट के सीनियर एडवोकेट का कार्यक्रम में विशेष योगदान रहा। इस एन.जी.ओ. के अध्यक्ष श्री जी.वी.जी. कृष्णामूर्ति (पूर्व चुनाव आयुक्त) हैं।

उल्लेखनीय है कि कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार का आर्य समाज तथा शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने के अतिरिक्त 'मनुस्मृति' पर विशिष्ट कार्य है। उन्होंने 'मनुस्मृति' की प्रासंगिकता तथा महत्ता पर विशिष्ट कार्य कर समाज को यह संदेश दिया है कि मनुस्मृति ही एक ऐसा ग्रन्थ है जो समाजिक समरसता तथा सामाजिक सुदृढ़ न्याय व्यवस्था को बताता है। उन्होंने मनु तथा मनुस्मृति पर हुए अनेक संदेहास्पद तथा प्रहारात्मक विवादों को सरलता से सुलझाया है। डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने वैदिक धर्म एव संस्कृति पर भी महत्त्वपूर्ण कार्य किया है व्याख्यानों, तथा टी.वी. वार्ताओं के माध्यम से भी उन्होंने महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द के कृत्कार्यों की महत्ता को उजागर किया है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी को 'उत्तराखण्ड रत्न' सम्मान प्रदान करते छत्तीसगढ़ के पूर्व राज्यपाल श्री के. एम. सेठ एवं उत्तराखण्ड हाईकोर्ट के पूर्व जस्टिस श्री राजेश टंडन।

देहरादून में आयोजित कार्यक्रम में बैंगलौर से आए सीनियर एडवोकेट शिव शेखरन, डॉ. एस. फारूख लखनऊ के एस.के. गर्ग, मुरादाबाद के डॉ. ए.के. सिंह, एम्स से डॉ. राजकुमार, सीनियर एडवोकेट सुभाष माहेश्वरी, पी.एन. शर्मा, ए.के. शर्मा, पी.के. जैन, एच. एन. शर्मा, ए.के. अग्रवाल, डी.डी. शर्मा, बाबूराम बालियान, हेमन्त अरोड़ा, करण मल्होत्रा एस.के. शर्मा तथा अन्य अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

– डॉ. प्रदीप कुमार जोशी,
जनसम्पर्क अधिकारी

वैचारिक क्रान्ति के लिए
"सत्यार्थ प्रकाश" पढ़ें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

8-9वां आर्य परिवार विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन

15 जून, 2014 : आर्यसमाज मल्हारगंज, इन्दौर (म.प्र.) | **20 जुलाई, 2014 : आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15**

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा आयोजित आरम्भ किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के 8 वें एवं 9वें परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। **8वां सम्मेलन रविवार, 15 जून 2014 को प्रातः 10 बजे आर्य समाज मल्हार गंज इन्दौर (म.प्र)** में तथा **9वां सम्मेलन 20 जुलाई, 2014 को आर्यसमाज कीर्ति नगर नई दिल्ली** मे आयोजित किया जाएगा। जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www. thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1'** के पते पर भेज दें।

जिन आर्य बन्धुओं के आवेदन पत्र **(इन्दौर हेतु) 1 जून, 2014** तथा **दिल्ली हेतु 5 जुलाई, 2014** तक हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक-युवती परिचय दिग्दर्शिका में प्रकाशित हो सकेंगे। **सम्मेलन के आयोजन के दिन भी दोनों स्थानों पर तत्काल पंजीकरण की सुविधा 100/- रुपये (एक सौ रु.) के अतिरिक्त शुल्क के साथ उपलब्ध होगी।** तत्काल पंजीकरण कराने वाले आर्य युवक-युवतियों के नाम सप्लीमैंट्री पुस्तिका में प्रकाशित किए जाएंगे। जोकि सभी प्रतिभागियों को 15 अगस्त, 2014 तक भेजी जाएगी।

निवेदक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा
राष्ट्रीय संयोजक
(09414187428)

आवश्यकता है

आर्यसमाज का इतिहास जब तक लिखा जा चुका है उससे आगे आर्यसमाज का इतिहास लेखन का कार्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा आरम्भ किया जा रहा है। जो वैदिक विद्वान पूरी लगन एवं दृढ़ता से इतिहास लिखने की इच्छा रखते हों वे पत्र लिखकर सम्पर्क करें। उचित दक्षिणा एवं सहायक व्यवस्था प्रदान की जाएगी।

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज पश्चिम पुरी के लिए एक सुयोग्य अवैतनिक विद्वान् पुरोहित की आवश्यकता है जो ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित संस्कार विधि के अनुसार संस्कारों का कराने में समक्ष हो। पुरोहित के लिए आवास, बिजली, पानी की व्यवस्थाएं प्रदान की जाएंगी। इच्छुक महानुभाव मन्त्री के नाम प्रार्थना पत्र भेजें।

सतीश आर्य, मन्त्री
आर्यसमाज पश्चिमपुरी, प्लाट आर.-5, पॉकेट-3, नई दिल्ली-63
मो. 9810815845

पंजीकरण संख्या : ।। ओ३म्।। रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001 दूरभाष :- 011-23360150, 23365959,
Email: aryasabha@yahoo.com web : www.thearyasamaj.org IVRS No. -011-23488888

पंजीकरण प्रपत्र

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रूप से लगाएं।"

: व्यक्तिगत विवरण :

1. युवक/युवती का नाम :.....गोत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....समय :.....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई.....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/ पता .....
..... मासिक आय .....

: पारिवारिक विवरण :

6. पिता/सरंक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता: .....
.....
दूरभाष :..... मोबा :..... ईमेल: .....
8. मकान निजी/किराये का है.....
9. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
10. भाई: विवाहित ..... अविवाहित: ..... बहन : विवाहित ..... अविवाहित :.....
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? .....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/ युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✔) लगाएं : विधुर : ☐ विधवा: ☐ तलाकशुदा: ☐ विकलांग: ☐
14. विशेष: किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में लिखें:.....
.....

दिनांक : ..... पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर

नोट:1. कृपया इस फार्म के साथ निर्धारित रजिस्ट्रेशन शुल्क रु. 400/- (इन्दौर तथा दिल्ली में आयोजित दोनों सम्मेलनों हेतु) अथवा 200/- (इन्दौर या दिल्ली में आयोजित किसी एक सम्मेलन हेतु) का ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें। अथवा **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा** के नाम **एक्सिज बैंक खाता सं. 910010001816166** करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। **परिचय सम्मेलन दिनांक 15 जून 2014 (रविवार)को आर्यसमाज मल्हारगंज इन्दौर (म.प्र.) तथा 20 जुलाई, 2014 रविवार को आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली में सम्पन्न होंगे।**
कृपया सही (✔) का निशान लगाएं।
☐ इन्दौर में (200/-) ☐ दिल्ली में (200/-) ☐ दोनों में (400/-)

2. विक्लांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क में 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।
5. पंजीकरण के लिए फार्म केवल दिल्ली सम्मेलन कार्यालय में ही भेजे जाएं।
6. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। **कॉलम नं. 11 भरे बिना फार्म स्वीकार्य नहीं किया जाएगा।**

युवक और युवतियां परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें - *महर्षि दयानन्द सरस्वती*

आर्यसमाज सागरपुर नई दिल्ली का

34वां वार्षिकोत्सव

समापान समारोह : 27 अप्रैल, 2014

यज्ञ-भजन-प्रवचन: प्रात: 7-9:30 बजे
ब्रह्मा : आचार्य सत्य प्रकाश साधक
भजन : श्री योगेन्द्र शास्त्री
ऋषि लंगर : दोपहर 1 बजे
आप सब सादर आमन्त्रित हैं।

- श्रीमती कमलेश आर्या, प्रधान

आर्यसमाज पंखा रोड सी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली का

वार्षिकोत्सव समारोह

समापन समारोह 27 अप्रैल, 2014

यज्ञ ब्रह्मा : डॉ. प्रणव देव आर्य
भजन : डॉ. कैलाश कर्मठ
प्रवचन : डॉ. वेदपाल
आप सब सादर आमन्त्रित हैं।

- अजय तनेजा, मन्त्री

54वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल वैदिक आश्रम, वेदव्यास, राउरकेला (उड़ीसा)-769004 का 54वां वार्षिकोत्सव 26-28 फरवरी को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वेद पारायण यज्ञ, ऋषि बोधोत्सव, वेद सम्मेलन, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, भजन, एवं क्रीड़ा प्रदर्शन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

- पं. धनेश्वर बेहेरा, संयोजक

पुरोहित चाहिए

श्रद्धानन्द अनाथालय ट्रस्ट (रजि.), कर्णताल, करनाल - 132001 (हरि.) को एक विद्वान पुरोहित की आवश्यकता है, जिसने गुरुकुल पद्धति से शिक्षा ग्रहण किया हो और विवाहित हो। भोजन एवं आवास सुविधा नि:शुल्क एवं वेतन योग्यता अनुसार दिया जाएगा। इच्छुक प्रार्थी अपने प्रमाण पत्र शीघ्र भेजें।

- महाप्रबन्धक, मो. 9416566429
shradhanandorphanage111@gmail.com

आर्यसमाज चोपन सोनभद्र उ.प्र.में

महर्षि जयन्ती एवं बोधोत्सव

24 फरवरी को आर्यसमाज चोपन में महर्षि दयानन्द जी का 190वां जन्मोत्सव एवं ऋषि बोधोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नगर पंचायत चोपन के अध्यक्ष श्री इम्तियाज अहमद मुख्य अतिथि थे। सांस्कृतिक कार्यक्रम लघु नाटिका 'सच्चे शिव की खोज' एवं दहेज गीत 'हमें क्या बेचेगा रुप्पया' द्वारा लोगों को जनजागरण का सन्देश दिया गया।

- शम्भू प्रसाद आर्य, प्रधान

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मस्जिद मोठ
नई दिल्ली-49

प्रधान : श्री चतर सिंह नागर
मन्त्री : श्री ओम प्रकाश सैनी
कोषाध्यक्ष : श्री देवेन्द्र कुमार

प्रथम पृष्ठ का शेष

'ओ३म्' का अर्थ एवं .....

वह प्राप्त हो जाता है। इसी 'ओ३म्' का सबसे श्रेष्ठ सहारा है, इसी का सबसे अन्तिम सहारा है, इसी सहारे को जानकर ब्रह्मलोक में मनुष्य महान हो जाता है। प्रश्नोपनिषद् में सत्यकाम ने महर्षि पिप्पलाद से प्रश्न किया- जो मनुष्य (भक्त) जीवन भर 'ओ३म्' का ध्यान करे। इस 'ओ३म्' के ध्यान से वह किस लोक को जीत लेता है? अर्थात किन-किन सुखों को प्राप्त करता है?

महर्षि पिप्पलाद 'ओ३म्' की उपासना का महत्त्व बताते हुए सत्यकाम से कहते हैं। 'ओ३म्' में अ,उ,म् तीन मात्राएँ है। 'ओ३म्' की एकमात्रा का ध्यान करने से (अर्थात् थोड़ा ध्यान करना) मनुष्य लोक को जीत लेता है। 'ओ३म्' की एक मात्रा का ज्ञान ऋग्वेद का ज्ञान है जिसमें तप, ब्रह्मचर्य और श्रद्धा से युक्त होकर परमात्मा की महिमा का अनुभव करता है। वह भक्त मनुष्य लोक में सांसारिक सुख-सामाग्री को प्राप्त करता है।

'ओ३म्' की दो मात्राओं का ध्यान ऋग्वेद के साथ यजुर्वेद का भी ज्ञान है। 'ओ३म्' के जप में दो मात्रा का ध्यान (अधिक मन लगाकर जप करना) करने से अन्तरिक्ष में सोम-लोक को जीत लेता है। मानसिक शान्ति को प्राप्त करता है। जब साधक 'ओ३म्' की तीन मात्राओं का ध्यान करता है तो मानों ऋग्वेद, यजुर्वेद के साथ सामवेद का ज्ञान प्राप्त करता है। 'ओ३म्' की तीन मात्रा का ध्यान उसमें पूर्ण समर्पण, भक्ति भाव, एकाग्र होकर मन को प्रभु की भक्ति में लगाता है। वह भक्त सूर्यलोक को जीत लेता है। वह परमानन्द को प्राप्त हो जाता है। 'ओ३म्' का जप उपासक को परम सुख देता है। 'ओ३म्' की तीनों मात्रा एक दूसरे के साथ सटी हैं। एक मात्रा के ध्यान से भक्त स्वयं अगली मात्रा पर पहुँच जाता है। स्वयं उत्तरोत्तर ऊर्ध्वगति को प्राप्त होता जाता है। 'ओ३म्' की उपासना से उपासक उस शांत, अजर, अमृत, अभय, परब्रह्म को प्राप्त कर लेता है।

मुण्डकोपनिषद् में अंगिरा ऋषि जिज्ञासु शिष्य शौनक को 'ओ३म्' की महिमा का उपदेश करते हुए कहते है।

प्रणवो धनु: शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते।अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत्।।

(मुण्डकोपनिषद् 2/4)

प्रणव ('ओ३म्') धनुष है, आत्मा शर है, ब्रह्म लक्ष्य है। अप्रमन्त होकर इस लक्ष्य का वेध करे फिर जैसे शर लक्ष्यमय हो जाता है। वैसे आत्मा ब्रह्ममय हो जाता है। अंगिरा कृषि कहते हैं कि 'ओ३म्' का ध्यान करो। इसीसे आत्म-कल्याण होगा। गाढ़ान्धकार के उस पार ले जाने का यही साधन है।

- आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा,
जी.एच.-8/164,
पश्चिम विहार, नई दिल्ली

'गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में हुआ युवामहोत्सव'

"संपूर्ण जीवन सीखने के लिए है, युवाओं में ऊर्जा होती है अत: युवा इस आयु में शीघ्र सीखने की शक्ति रखते हैं।'' गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आयोजित युवा महोत्सव को पूर्व विधायक अम्बरीश कुमार मुख्य अतिथि के रुप में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यौवन का मतलब होता है जीवन का सर्वश्रेष्ठ समय, सर्वाधिक ऊर्जावान समय। युवा होना ही अपने आप में उत्सव है। उन्होंने छात्रों से कहा कि आप लोग केवल अपने समाज और देश तक ही सीमित न रहे, आपसे पूरी दुनिया को अपेक्षाएं है। युवा का अर्थ प्रगतिशील भी होता है, अत: आप अपनी सोच को वर्तमान से निकालकर भविष्य के लिए आगे बढ़ाएं। उन्होंने कहा कि आप लोगों को जमाने के साथ अपडेट भी करना होगा। संकल्प शक्ति अंदर पैदा करके आप अपने देश का ऋण चुकाने में समर्थ हो सकते हो। अच्छाइयों को ग्रहण कर बुराइयों को छोड़ने में प्रवृत्त रहेंगे तो आपकी अपनी, समाज की और सम्पूर्ण देश की प्रगति में सहायता होगी।

कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि गुरुकुल के विद्यार्थियों से विश्व को बड़ी आशाएं हैं। उन्होंने कहा कि आप चाहे इंजीनियर बनें अथवा डाक्टर, शिक्षक बनें अथवा राजनीतिज्ञ लेकिन गुरुकुल की संस्कृति को न भूलें। गुरुकुलीय संस्कार आपको अन्यों से बिलकुल अलग स्थापित करते हैं।

विशिष्ट अतिथि सतपाल ब्रह्मचारी ने कहा कि जिस ओर युवा शक्ति चलती है उस ओर जमाना चलता है और देश और समाज की तरक्की होती है। उन्होंने छात्रों से निरन्तर आचार्यों का सम्मान करने के लिए कहा।

बीएचईएल के उपमुख्य प्रबंधक हीरालाल मीणा ने कहा कि गुरुकुल को वैदिक संस्कृति और संस्कृत की रक्षा करने वाले के तौर पर जाना जाता है।

पूर्व युवा कांग्रेस अध्यक्ष राजीव चौधरी ने कहा कि मनुष्य को अपने जीवन में कभी भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए, हौसला रखकर चलने पर ही उन्नति होती है। उन्होंने कहा कि गुरुकुल एक ऐसा शिक्षण संस्थान है जो देश को दिशा देने में समर्थ है। उन्होंने कहा कि राजनीति खराब नहीं है, यदि राजनीति को स्वार्थ के लिए नहीं अपितु परमार्थ के लिए अपनाया जाए।

कुलसचिव प्रो0 विनोद शर्मा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. दीन दयाल एवं छात्र संयोजक संदीप ब्रह्मचारी ने संयुक्त रुप से किया। कार्यक्रम में छात्र संघ अध्यक्ष अमित कुमार, कोषाध्यक्ष आशीष नवानी, सचिव जितेन्द्र धाकड़ , धीरेन्द्र कुमार, सचिन भारद्वाज, विनोद कुमार मीणा, अजय कुमार आदि का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में समस्त छात्र, प्राध्यापक तथा कर्मचारी गण उपस्थित थे। *- डॉ. प्रदीप कुमार जोशी*
जनसम्पर्क अधिकारी

योग से होता है तन एवं मन स्वस्थ-चड्ढा

आर्य समाज विज्ञान नगर में 4 दिवसीय योग शिविर सम्पन्न

"योग से रोग समाप्त होते हैं, योग से तन एवं मन स्वस्थ होता है। योग से सकारात्मक सोच जागृत होती है, योग भारत के नवनिर्माण में सहायक है।" उक्त विचार आर्यसमाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने आर्यसमाज विज्ञाननगर में आयोजित 4 दिवसीय योग शिविर के शुभारम्भ पर व्यक्त किये।

पंतजलि योग समिति के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय एवं मुख्य योग शिक्षक प्रदीप शर्मा, योग ऋषि स्वामी रामदेव जी महाराज द्वारा बताये गये प्राणायाम, आसन, सूक्ष्म व्यायाम एवं ध्यान का अभ्यास भी करवाया। मधुमेह (डायबिटीज) रोग से मुक्ति के लिए कपालभाति, प्राणायाम, अग्निसार क्रिया एवं मण्डूक आसन का अभ्यास करवाया व घरेलू उपाय बताये।

शिविर में आर्यसमाज के मंत्री राकेश चड्ढा, संयोजक सुमेश गांधी, अशोक अग्निहोत्री आदि उपस्थित थे।

समापन समारोह के अवसर पर विभिन्न रोग विशेषज्ञों द्वारा प्राणायाम से रोगोपचार के बारे में बताया गया। आर्यसमाज के प्रधान जे.एस.दुबे ने आभार व्यक्त किया।

- राकेश चड्ढा, मन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी.) में

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पाद उपलब्ध

1. आंवला कैंडी 500 ग्राम	160/-	9. सफेद सुरमा 1/2 ग्राम	32/-
(सूखा मुरब्बा) 1 किलो	286/-	10. महाभृंगराज तेल 250ग्राम	206/-
2. च्यवनप्राश स्पेशल 1 किलो	294/-	11. आंवला रस 1 लीटर	154/-
3. गुरुकुल चाय 400 ग्राम	201/-	12. मधुमेहनाशिनी 50 ग्रा.	259/-
4. गुरुकुल चाय 200 ग्राम	111/-	**सभी उपलब्ध उत्पादों पर 10% की**	
5. गुरुकुल चाय 100 ग्राम	61/-	**आकर्षक छूट। प्राप्त करने/अधिक**	
6. गुलकन्द 250 ग्राम	114/-	**जानकारी के लिए 9540040339 पर**	
7. पायोकिल मंजन 60 ग्राम	88/-	**श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें।**	
8. पायोकिल मंजन 25 ग्राम	42/-		

- महामन्त्री

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 21 अप्रैल, 2014 से रविवार 27 अप्रैल, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 24/25 अप्रैल, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 23 अप्रैल, 2014

"वेद का पढ़ना-पढ़ना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" महर्षि दयानन्द जी के इस वचन को पूरा करने के लिए और परमात्मा की पावन वाणी को हर घर तक पहुंचाने के उद्देश्य से चारों वेदों की ओडियो डी.वी.डी. तैयार की गई है। यह कार्य विश्व में इतिहास में पहली बार हुआ है जबकि चारों वेदों (ऋग्, यजु, साम, अथर्व) को ऑडियो डी.वी.डी. में डेढ़ वर्ष के कठिन परिश्रम तथा उच्च कोटि के विद्वानों के निरीक्षण में अत्यन्त सावधानी पूर्वक तैयार किया गया है। **362 घंटे** की इस डीवीडी पर 1000/- रुपये लागत आ रही है जबकि वेदों को हर घर तक पहुंचने के उद्देश्य से यह **डीवीडी मात्र 500/- रुपये** की सहयोग राशि में उपलब्ध कराई जा रही है। वेद का प्रचार-प्रसार करना ऋषियों ने परम पुरुषार्थ माना है। अत: इसी समय चारों वेदों की ऑडियो डी.वी.डी. प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें–

वैदिक प्रकाशन विभाग,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001,
फोन – 011–23360150, 9540040339

प्रतिष्ठा में,

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 70/– किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)

अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध

प्राप्ति स्थान **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, दूरभाष - 23360150

पृष्ठ 4 का शेष

अलग-अलग मत है। अत: अगली गोष्ठी ईश्वर के स्वरुप पर होनी चाहिए। अन्त में इस गोष्ठी की रूपरेखा एवं योजना के सूत्रधार **श्री राजीव चौधरी** ने गोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. अशोक चौहान, आमन्त्रित गणमान्य अतिथियों और विषय प्रस्तुतकर्ता विद्वानों का धन्यवाद किया। गोष्ठी में उपस्थित लगभग 500 से अधिक सुधी श्रोताओं में से अनेक श्रोताओं ने सभी विद्वानों से प्रश्न पूछे। सभी सम्बन्धित विद्वानों ने उन प्रश्नों का समाधान भी सुचारु रूप से किया।

इस आयोजन में स्थानीय लोगों ने भाग लिया ही, इसके अतिरिक्त दिल्ली और उसके आस-पास के विभिन्न क्षेत्रों (बल्लभगढ़, नरेला, फरीदाबाद, गुड़गाँव) से भी काफी संख्या में पधारकर लोगों ने इस अवसर का पूरा लाभ उठाया। अनेक गणमान्य व्यक्तियों के अलावा जन साधारण ने भी इस कार्यक्रम की भूरि भूरि प्रशंसा की जिससे भविष्य में भी इस प्रकार के कायक्रमों के आयोजन की प्रेरणा मिलती है। इस अवसर पर विभिन्न संगठनों से सम्बन्धित श्री आनन्द चौहान, श्री रजनीश गोयनका, श्री नीरज मुंजाल, श्री योगराज अरोड़ा, श्री इन्द्र सैन साहनी, श्री नितिन्जय चौधरी, श्रीमती बाला चौधरी, श्री डी. डी. अग्रवाल, श्री एल. आर. अग्रवाल, श्री सुरेश गुप्ता, डॉ. मधु गुप्ता भी उपस्थित थे। – **मुख्य संयोजक**

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर